Yaqeene Kamil Ki Barakaten (Hindi)

फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा (क़िस्त : 9)

यक़ीने कामिल की ब-र-कतें

(मअ़ दीगर दिलचस्प सुवाल व जवाब)

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी** دامت برکاتہم العالیہ के म-दनी मुज़ा-करे की रोशनी में मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या के शो'बे "फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा" की त़रफ़ से नए मवाद के काफ़ी इज़ाफ़े के साथ मुरत्तब किया गया है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (المُستطرَف ج ١ ص ٤٠ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

यक़ीने कामिल की ब-र-कतें

येह रिसाला **(यक़ीने कामिल की ब-र-कतें)** दा'वते इस्लामी की मजलिस **''अल मदीनतुल इल्मिय्या** (शो'बए फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा)'' ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)
मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात MO. 9374031409
E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

www.dawateislami.net

पहले इसे पढ़ लीजिये !

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के बानी, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने अपने मख़्सूस अन्दाज़ में सुन्नतों भरे बयानात, इल्मो ह़िक्मत से मा'मूर म-दनी मुज़ा-करात और अपने तरबियत याफ़्ता मुबल्लिग़ीन के ज़रीए थोड़े ही अ़र्से में लाखों मुसल्मानों के दिलों में म-दनी इन्क़िलाब बरपा कर दिया है, आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की सोह़बत से फ़ाएदा उठाते हुए कसीर इस्लामी भाई वक़्तन फ़ वक़्तन मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर होने वाले म-दनी मुज़ा-करात में मुख़्तलिफ़ क़िस्म के मौज़ूआ़त म-सलन अ़क़ाइदो आ'माल, फ़ज़ाइलो मनाक़िब, शरीअ़त व त़रीक़त, तारीख़ व सीरत, साइन्स व त़िब, अख़्लाक़िय्यात व इस्लामी मा'लूमात, रोज़मर्रा मुआ़-मलात और दीगर बहुत से मौज़ूआ़त से मु-तअ़ल्लिक़ सुवालात करते हैं और शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه इन्हें ह़िक्मत आमोज़ और इ़श्क़े रसूल में डूबे हुए जवाबात से नवाज़ते हैं।

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के इन अ़त़ा कर्दा दिलचस्प और इल्मो ह़िक्मत से लबरेज़ म-दनी फूलों की ख़ुश्बूओं से दुन्या भर के मुसल्मानों को महकाने के मुक़द्दस जज़्बे के तह़्त अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या का शो'बा **''फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा''** इन म-दनी मुज़ा-करात को ज़रूरी तरमीम व इज़ाफ़े के साथ **''मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत''** के नाम से पेश करने की सआ़दत ह़ासिल कर रहा है। इन तह़रीरी गुलदस्तों का मुत़ा-लआ़ करने से اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ अ़क़ाइदो आ'माल और ज़ाहिरो बात़िन की इस्लाह़, मह़ब्बते इलाही व इ़श्क़े रसूल की ला ज़वाल दौलत के साथ साथ मज़ीद ह़ुसूले इ़ल्मे दीन का जज़्बा भी बेदार होगा।

पेशे नज़र रिसाले में जो भी ख़ूबियां हैं यक़ीनन रब्बे रह़ीम عَزَّوَجَلَّ और उस के मह़बूबे करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अ़त़ाओं, औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की इनायतों और अमीर अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की शफ़्क़तों और पुर ख़ुलूस दुआओं का नतीजा हैं और ख़ामियां हों तो उस में हमारी ग़ैर इरादी कोताही का दख़्ल है।

शो'बए फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा

9 रबीउ़ल अव्वल 1436 सि.हि./01 जनवरी 2015 सि.ई.

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

यक़ीने कामिल की ब-र-कतें

शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए येह रिसाला (32 सफ़ह़ात) मुकम्मल पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मा'लूमात का अनमोल ख़ज़ाना हाथ आएगा ।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

नबियों के सुल्त़ान, रह़मते आ़-लमिय्यान, सरवरे ज़ीशान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : जो लोग किसी मजलिस में बैठते हैं फिर उस में न **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करते हैं और न ही उस के नबी (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) पर दुरूदे पाक पढ़ते हैं क़ियामत के दिन वोह मजलिस उन के लिये बाइ़से ह़सरत होगी । **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) चाहे तो उन को अ़ज़ाब दे और चाहे तो बख़्श दे ।[1]

पढ़ता रहूं कसरत से दुरूद उन पे सदा मैं
और ज़िक्र का भी शौक़ पए ग़ौसो रज़ा दे

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अद्इय्यए मासूरा से मुराद

अ़र्ज़ : अद्इय्यए मासूरा से क्या मुराद है ? नीज़ इन्हें पढ़ने के

مدینہ

1 ... ترمذی، ج۵، ص۲۴۷، حدیث۳۳۹۱

www.dawateislami.net

फ़वाइदो ब-रकात भी बयान फ़रमा दीजिये ।

इर्शाद : अदइय्यए मासूरा से मुराद वोह दुआ़एं हैं जो हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيْم से मन्क़ूल हैं ख़्वाह उन्हें हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पढ़ा या उन के पढ़ने का हुक्म दिया या उन को पढ़ने की फ़ज़ीलत या फ़ाएदा और सवाब बयान फ़रमाया है ।[1] दूसरी दुआ़ओं की ब निस्बत मासूर दुआ़एं पढ़ने के बे शुमार फ़वाइदो ब-रकात हैं, इस ज़िम्न में तीन अदइय्यए मासूरा मअ़ फ़ज़ीलत मुला-हज़ा कीजिये :

❁ - **हज़रते** सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : जब कोई शख़्स अपने घर से निकले और येह दुआ़ पढ़ ले : ''بِسْمِ اللّٰهِ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰه'' (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम से शुरूअ़, मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर भरोसा किया, गुनाह से बचने और नेकी करने की ताक़त नहीं मगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मदद से)'' तो उसे उस वक़्त निदा दी जाती है कि (ऐ बन्दए ख़ुदा !) तुझे सीधी राह की हिदायत दी गई, तुझे ग़मों से किफ़ायत कर दिया गया, तेरी हिफ़ाज़त की गई और शयातीन को तुझ से दूर कर दिया गया। पस एक शैतान दूसरे से कहता है : ऐसे शख़्स को कैसे गुमराह किया जा सकता है जिसे

---

1 ..... बिहिश्त की कुन्जियां, स. 157, मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

हिदायत दी गई, किफ़ायत किया गया और महफ़ूज़ कर दिया गया हो।[1]

- **अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते** सय्यिदुना उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जो बन्दा हर दिन की सुब्ह़ और हर रात की शाम तीन बार येह दुआ़ पढ़े :

بِسْمِ اللّٰهِ الَّذِیْ لَا یَضُرُّ مَعَ اسْمِهٖ شَیْءٌ فِی الْاَرْضِ وَلَا فِی السَّمَآءِ وَهُوَ السَّمِیْعُ الْعَلِیْمُ

(**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम से शुरूअ़ कि उस के नाम के साथ ज़मीन व आस्मान में कोई भी चीज़ नुक़्सान नहीं देती और वोह सुनने वाला और जानने वाला है) तो उसे कोई चीज़ नुक़्सान न देगी।[2]

- **अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते** सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, शफ़ीए रोज़े शुमार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ख़ुश्बूदार है : जिस शख़्स ने किसी मुसीबत ज़दा को देख कर येह दुआ़ पढ़ी :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ عَافَانِیْ مِمَّا ابْتَلَاكَ بِهٖ وَفَضَّلَنِیْ عَلٰی كَثِیْرٍ مِّمَّنْ خَلَقَ تَفْضِیْلًا

(तमाम ता'रीफ़ें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये जिस ने मुझे इस बीमारी से बचाया जिस में तू मुब्तला है और मुझे अपनी मख़्लूक़ में से कसीर लोगों पर फ़ज़ीलत अ़ता फ़रमाई) तो जब तक ज़िन्दा है, उस मुसीबत से अमान में रहेगा।[3]

مدینہ

1 ...اَبُوْدَاوٗد، ج۴، ص۴۲۰، حدیث ۵۰۹۵ 2 ...اِبْنِ ماجَہ، ج۴، ص۲۸۴، حدیث ۸
3 ...تِرمِذی، ج۵، ص۲۷۲، حدیث ۳۴۴۲

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अहादीसे मुबा-रका में वारिद दुआएं अगर यक़ीने कामिल और सिद्क़े दिल के साथ पढ़ी जाएं तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इन के बयान कर्दा फ़ज़ाइल भी ज़रूर हासिल होंगे क्यूं कि हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़बाने हक़ तरजुमान कुन की कुन्जी है या'नी जो फ़रमाते हैं हो कर रहता है। मेरे आक़ा आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं :

वोह ज़बां जिस को सब कुन की कुन्जी कहें
उस की नाफ़िज़ हुकूमत पे लाखों सलाम

(हदाइक़े बख़्शिश)

यक़ीने कामिल की ब-र-कतें

अर्ज़ : सरकारे आली वक़ार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़रामीन पर यक़ीने कामिल से मु-तअ़ल्लिक़ कोई वाक़िआ इर्शाद फ़रमा दीजिये ताकि हमारे लिये तरग़ीब का सामान हो जाए।

इर्शाद : सरकारे आली वक़ार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़रामीन पर ए'तिक़ाद व यक़ीने कामिल से मु-तअ़ल्लिक़ आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, आशिक़े माहे नुबुव्वत, परवानए शम्ए रिसालत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के दो वाक़िआत मुला-हज़ा

www.dawateislami.net

कीजिये, चुनान्चे आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت फ़रमाते हैं : "(मुझे) बुख़ार बहुत शदीद था और गले के पीछे गिल्टें। मेरे मंझले (मुझ से छोटे) भाई (मौलाना ह़सन रज़ा ख़ान) मर्हूम एक त़बीब को लाए, उन दिनों बरेली में म-रज़े त़ाऊ़न ब शिद्दत था, उन साहि़ब ने बग़ौर देख कर सात आठ मर्तबा कहा : येह वोही है, वोही है, वोही है, या'नी म-रज़े त़ाऊ़न। मैं बिल्कुल कलाम न कर सकता था इस लिये उन्हें जवाब न दे सका ह़ालां कि मैं ख़ूब जानता था कि येह ग़लत़ कह रहे हैं, न मुझे त़ाऊ़न है, न اِنْ شَآءَ اللّٰهُ الْعَزِيْز कभी होगा, इस लिये कि मैं ने त़ाऊ़न ज़दा को देख कर बारहा वोह दुआ़ पढ़ ली है जिसे हु़ज़ूर सरवरे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ता'लीम फ़रमाया कि जो शख़्स किसी बला रसीदा (मुसीबत ज़दा) को देख कर येह दुआ़ पढ़ लेगा اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ उस बला से मह़फ़ूज़ रहेगा। वोह दुआ़ येह है :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ عَافَانِىْ مِمَّا ابْتَلَاكَ بِهٖ وَفَضَّلَنِىْ عَلٰى كَثِيْرٍ مِّمَّنْ خَلَقَ تَفْضِيْلًا [1]

जिन जिन अमराज़ के मरीज़ों, जिन जिन बलाओं के मुब्तलाओं को देख कर मैं ने इसे पढ़ा, بِحَمْدِهٖ تَعَالٰى आज तक उन सब से मह़फ़ूज़ हूं और بِعَوْنِهٖ تَعَالٰى (या'नी **अल्लाह** तआ़ला की मदद से) हमेशा मह़फ़ूज़ रहूंगा।"[2]

मज़ीद फ़रमाते हैं : मेरे पास इन अ़-मलिय्यात के ज़ख़ाइर भरे हैं लेकिन بِحَمْدِ اللّٰهِ تَعَالٰى आज तक कभी इस त़रफ़ ख़याल

1 ... تِرمِذی، ج۵، ص۲۷۲، حدیث ۳۴۴۲

2 ...... मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 69

www.dawateislami.net

भी नहीं किया । हमेशा उन दुआ़ओं पर जो अह़ादीस में इर्शाद हुईं अ़मल किया । मेरी तो तमाम मुश्किलात इन्हीं से ह़ल होती रहती हैं । (इस तज़्किरे में फ़रमाया) दूसरी बार जब का'बए मुअ़ज़्ज़मा ह़ाज़िर हुवा, यकायक (या'नी अचानक) जाना हो गया, अपना पहले से कोई इरादा न था । पहली बार की ह़ाज़िरी ह़ज़राते वालिदैने माजिदैन رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمَا के हमराहे रिकाब (या'नी हमराही में) थी । उस वक़्त मुझे तेईसवां साल था । वापसी में तीन दिन तूफ़ान शदीद रहा था, इस की तफ़्सील में बहुत तूल है । लोगों ने कफ़न पहन लिये थे । ह़ज़रत वालिदए माजिदा का इज़्तिराब (या'नी परेशानी) देख कर उन की तस्कीन (या'नी तसल्ली) के लिये बे साख़्ता मेरी ज़बान से निकला कि आप इत़्मीनान रखें, ख़ुदा की क़सम ! येह जहाज़ न डूबेगा । येह क़सम मैं ने ह़दीस ही के इत़्मीनान पर खाई थी जिस में कश्ती पर सुवार होते वक़्त ग़र्क़ (या'नी डूबने) से ह़िफ़ाज़त की दुआ़[1] इर्शाद हुई है । मैं ने वोह दुआ़ पढ़ ली थी लिहाज़ा ह़दीस के वा'दए सादिक़ा (या'नी सच्चे वा'दे) पर मुत़्मइन था । फिर भी क़सम के निकल जाने से ख़ुद मुझे अन्देशा हुवा और मअ़न ह़दीस याद आई : مَنْ یَّتَاَلَّ عَلَی اللّٰهِ یُکَذِّبْهُ (या'नी) जो **अल्लाह** तआ़ला पर क़सम

---

1 ......कश्ती में सुवार होते वक़्त की दुआ़ : بِسْمِ اللّٰهِ الْمَلِكِ الرَّحْمٰنِ مَجْرٖهَا وَمُرْسَاهَا اِنَّ رَبِّیْ لَغَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ **तरजमा : अल्लाह** मालिक व मेह्रबान के नाम पर इस का चलना और इस का ठहरना बेशक मेरा रब ज़रूर बख़्शने वाला मेह्रबान है । (کنزالعمّال، ج۶، ص۳۰۳، حدیث۱۷۵۳۴)

www.dawateislami.net

खाए, **अल्लाह** उस की क़सम को रद फ़रमा देता है।[1] ह़ज़रत इ़ज़्ज़त (या'नी **अल्लाह** तआ़ला) की त़रफ़ रुजूअ़ की और सरकारे रिसालत (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) से मदद मांगी اَلْحَمْدُ لِلّٰه (عَزَّوَجَلَّ) कि वोह मुख़ालिफ़ हवा कि तीन दिन से ब शिद्दत चल रही थी दो घड़ी में बिल्कुल मौक़ूफ़ हो गई (या'नी रुक गई) और जहाज़ ने नजात पाई।[2]

اَلْبَحْرُ عَلَا وَالْمَوْجُ طَغٰی मन बे कसो त़ूफ़ां होशरुबा
मंजधार में हूं बिगड़ी है हवा, मोरी नय्या पार लगा जाना

(ह़दाइके़ बख़्शिश)

(या'नी समुन्दर चढ़ा हुवा है और मौजें त़ुग़यानी पर हैं। मैं बेकस हूं और तूफ़ान होश उड़ाने वाला है। मैं भंवर में फंस गया हूं और हवा भी मुख़ालिफ़ सम्त चल रही है। **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! ऐसी ह़ालत में आप मेरी कश्ती को कनारे लगा दीजिये।)

शैख़ैन, त़-र-फ़ैन, साह़िबैन और सह़ीह़ैन से मुराद

अ़र्ज़ : शैख़ैन, त़-रफ़ैन, साह़िबैन, सह़ीह़ैन और सिह़ाह़ सित्ता से क्या

مدینہ

1 ...كنز العمّال، ج١٥، ص٣٨٨، حديث ٤٣٥٨٠

(या'नी ख़्वाह म ख़्वाह हुक्मे क़त़ई करे कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ज़रूर ऐसा करेगा जैसे कोई **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम खा कर कहे कि फ़ुलां शख़्स जन्नत में जाएगा, फ़ुलां दोज़ख़ में। (शो'बए फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा)

2 ......मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 181, 182

www.dawateislami.net

मुराद है ?

इर्शाद : ख़ु-लफ़ाए राशिदीन में से अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ और अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا को, मुह़द्दिसीन में से इमाम मुह़म्मद बिन इस्माईल बुख़ारी और इमाम मुस्लिम बिन ह़ज्जाज क़ुशैरी رَحِمَہُمَا اللّٰہُ تَعَالٰی को और अइम्मा में से इमामे आ'ज़म नो'मान बिन साबित व इमाम अबू यूसुफ़ رَحِمَہُمَا اللّٰہُ تَعَالٰی को **शैख़ैन** कहा जाता है।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा व ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन ह़सन शैबानी رَحِمَہُمَا اللّٰہُ تَعَالٰی को **त़-रफ़ैन** और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू यूसुफ़ और इमाम मुह़म्मद बिन ह़सन शैबानी رَحِمَہُمَا اللّٰہُ تَعَالٰی को **साह़िबैन** कहते हैं।

अह़ादीसे मुबा-रका की दो मश्हूर किताबों सह़ीह़ बुख़ारी और सह़ीह़ मुस्लिम को "**सह़ीह़ैन**" कहा जाता है और अगर इन के साथ सु-नने अर्बआ़ (सु-नने अबू दावूद, सु-नने तिरमिज़ी, सु-नने इब्ने माजह और सु-नने नसाई) भी शामिल हों तो इन छ[6] कुतुबे अह़ादीस को "**सिह़ाह़ सित्ता**" कहा जाता है।

क़ुरआने पाक को चूमना कैसा ?

अ़र्ज़ : क़ुरआने पाक को चूमना और चेहरे पर मस करना कैसा है ?

www.dawateislami.net

इर्शाद : कुरआने पाक को चूमना और चेहरे पर मस करना सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के फ़े'ल से साबित है चुनान्चे फ़िक़्हे ह़-नफ़ी की मश्हूरो मा'रूफ़ किताब **दुर्रे मुख़्तार** में है : अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रोज़ाना सुब्ह़ को मुस्ह़फ़ (या'नी कुरआने मजीद) को बोसा देते थे और कहते येह मेरे रब का अ़ह्द और उस की किताब है । अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी मुस्ह़फ़ को बोसा देते और चेहरे से मस करते थे ।[1]

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : ''मुस्ह़फ़ (या'नी कुरआन) शरीफ़ को ता'ज़ीमन सर और आंखों और सीने से लगाना और बोसा देना जाइज़ व मुस्तह़ब है कि वोह आ'ज़म शआ़इर से है और ता'ज़ीमे शआ़इर تَقْوَى الْقُلُوْب (दिलों की परहेज़ गारी) से ।''[2]

सिल्सिलए आ़लिय्या चिश्तिय्या के अ़ज़ीम पेशवा, ख़्वाजए ख़्वाजगान, सुल्त़ानुल हिन्द ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ह़सन सन्जरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی का फ़रमान है : जो शख़्स कुरआन शरीफ़ को देखता है **अल्लाह** तआ़ला के फ़ज़्लो करम से उस की बीनाई ज़ियादा हो जाती है और उस की आंख कभी नहीं दुखती और न ख़ुश्क होती है ।

مدینہ

1 ... دُرِّمختار، ج۹، ص۶۳۴

2 ..... फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 22, स. 563

www.dawateislami.net

एक मर्तबा एक बुजु़र्ग सज्जादे पर बैठे हुए थे और सामने क़ुरआन शरीफ़ रखा था। एक नाबीना ने आ कर इल्तिमास की, कि मैं ने बहुत इलाज किये मगर आराम नहीं हुवा अब आप के पास आया हूं ताकि मेरी आंखें ठीक हो जाएं। मैं आप से फ़ातिहा के लिये मुल्तजी (दर-ख़्वास्त गुज़ार) हूं। उस बुजु़र्ग ने क़िब्ला रुख़ हो कर फ़ातिहा पढ़ी और क़ुरआन शरीफ़ उठा कर उस की आंखों पर मला जिस से उस की दोनों आंखें रोशन हो गईं।[1]

क़ुरआने पाक वाले सन्दूक़ पर सामान रखना कैसा ?

अ़र्ज़ : क़ुरआने पाक जिस सन्दूक़ या अल्मारी में हो उस के ऊपर सामान का थैला (Bag) वग़ैरा रख सकते हैं या नहीं ?

इर्शाद : क़ुरआने पाक जिस सन्दूक़ या अल्मारी में हो उस के ऊपर सामान का थैला (Bag) वग़ैरा रखना तो दूर की बात फु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं उस पर कपड़ा भी न रखा जाए चुनान्चे सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : क़ुरआने मजीद जिस

[1] ... دلیل العارفین از ہشت بہشت، ص ۸۰

www.dawateislami.net

सन्दूक़ में हो उस पर कपड़ा वग़ैरा न रखा जाए।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अपने दिलों में क़ुरआने मजीद की अ़ज़मत पैदा कीजिये और ख़ूब ख़ूब इस का अ-दबो एह़तिराम बजा लाइये, हो सकता है कि येही अ़मल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में क़बूल हो जाए और हमारी मग़्फ़िरत का सबब बन जाए। दलीलुल आ़रिफ़ीन में है कि पहले ज़माने में एक फ़ासिक़ नौ जवान था जिस की बदकारी से मुसल्मानों को नफ़रत आती थी। उसे बहुत मन्अ़ करते लेकिन वोह एक न सुनता। अल ग़रज़ जब उस का इन्तिक़ाल हो गया तो किसी ने उसे ख़्वाब में देखा कि सर पर ताज रखे फ़िरिश्तों के हमराह जन्नत में जा रहा है, उस से पूछा कि तू तो बदकार था, येह दौलत कहां से नसीब हुई ? जवाब दिया : दुन्या में मुझ से एक नेकी हुई वोह येह कि जहां कहीं क़ुरआन शरीफ़ पर मेरी निगाह पड़ती, खड़े हो कर ता'ज़ीम की नज़र से उसे देखता। **अल्लाह** तआ़ला ने मुझे इस की बदौलत बख़्श दिया और येह द-रजा इनायत फ़रमाया।[2]

क़ुरआने पाक पर दीनी कुतुब रखना कैसा ?

अ़र्ज़ : क्या क़ुरआने पाक पर कोई दीनी किताब भी नहीं

مدینہ

1... बहारे शरीअ़त, जि. 3, स. 495

2... دلیل العارفین از بہشت، ص ۸۰

www.dawateislami.net

रख सकते ?

इर्शाद : कुरआने पाक पर कोई दीनी किताब बल्कि तरजमा व तफ़्सीर भी नहीं रख सकते। सब से ऊपर कुरआने पाक होना चाहिये इस के नीचे द-रजा ब द-रजा दीगर किताबें रखी जाएं। किताबों के एक दूसरे पर रखने की तरतीब बयान करते हुए सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : लुग़त व नह्व व सर्फ़ का एक मर्तबा है, इन में हर एक की किताब को दूसरे की किताब पर रख सकते हैं और इन से ऊपर इ़ल्मे कलाम की किताबें रखी जाएं, इन के ऊपर फ़िक़्ह और अह़ादीस व मवाइ़ज़ व दा'वाते मासूरा फ़िक़्ह से ऊपर और तफ़्सीर को इन के ऊपर और कुरआने मजीद को सब के ऊपर रखें। कुरआने मजीद जिस सन्दूक़ में हो उस पर कपड़ा वग़ैरा न रखा जाए।[1]

कुरआने पाक हाथों से छूटने का कफ़्फ़ारा

अ़र्ज़ : कुरआने पाक हाथों से छूट जाए तो इस का क्या कफ़्फ़ारा है ?

इर्शाद : कुरआने पाक हाथों से छूट जाए तो शरअ़न इस का कोई कफ़्फ़ारा नहीं अलबत्ता कुछ न कुछ स-दक़ा कर देना

1 ..... बहारे शरीअ़त, जि. 3, स. 495

www.dawateislami.net

बेहतर है ताकि इस मुआ़-मले में जो ग़फ़्लत या कोताही हुई वोह मुआ़फ़ हो जाए। बा'ज़ अ़लाक़ों में क़ुरआने मजीद हाथ से छूट कर ज़मीन पर तशरीफ़ ले आए तो गन्दुम या आटा क़ुरआने मजीद के बराबर तोल कर स-दक़ा कर देते हैं। गन्दुम या आटा स-दक़ा करना अच्छा अ़मल है मगर क़ुरआने मजीद के बराबर तोल कर ख़ैरात करना ज़रूरी नहीं बल्कि कमी बेशी के साथ भी स-दक़ा व ख़ैरात कर सकते हैं।

नंगे सर बैतुल ख़ला में जाना कैसा ?

अ़र्ज़ : नंगे सर बैतुल ख़ला में जाना कैसा है ?

इर्शाद : नंगे सर बैतुल ख़ला में जाना मम्नूअ़ है। सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ القَوِی फ़रमाते हैं : नंगे सर पाख़ाना, पेशाब को जाना या अपने हमराह ऐसी चीज़ ले जाना जिस पर कोई दुआ़ या **अल्लाह** व रसूल या किसी बुज़ुर्ग का नाम लिखा हो मम्नूअ़ है। यूंही कलाम करना मक्रूह है।[1] लिहाज़ा बैतुल ख़ला में जाते वक़्त सर को किसी चीज़ से ढांप लेना चाहिये कि येह सुन्नत है चुनान्चे मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الحَنَّان फ़रमाते हैं : सर ढक कर पाख़ाने

مدینہ

1..... बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 409

www.dawateislami.net

जाना सुन्नत है, नंगे सर पाख़ाने जाने वाला इस सुन्नत में अ़मल न कर सका ।[1]

औ़रत का अपने शोहर को नाम ले कर पुकारना कैसा ?

अ़र्ज़ : क्या औ़रत अपने शोहर का नाम ले तो त़लाक़ पड़ जाती है ?

इर्शाद : औ़रत अपने शोहर का नाम ले कर पुकारे तो इस से त़लाक़ नहीं पड़ती अलबत्ता औ़रत का अपने शोहर को नाम ले कर पुकारना मक्रूह है चुनान्चे सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : "औ़रत को येह मक्रूह है कि शोहर को नाम ले कर पुकारे । बा'ज़ जाहिलों में येह मश्हूर है कि औ़रत अगर शोहर का नाम ले ले तो निकाह़ टूट जाता है येह ग़लत़ है, शायद इसे इस लिये घड़ा हो कि इस डर से कि त़लाक़ हो जाएगी, शोहर का नाम न लेगी ।"[2]

पहले की ख़्वातीन अपने शोहर का नाम लेने से शरमाती थीं लेकिन आज कल अक्सर औ़रतें "मेरा शोहर, मेरा

1...... मिरआतुल मनाजीह़, जि. 1, स. 178
2...... बहारे शरीअ़त, जि. 3, स. 657 ता 658

www.dawateislami.net

शोहर'' कहते थकती हैं न लजाती हैं बल्कि शादी के बा'द बत़ौरे निस्बत अपने वालिद का नाम लेना तो कुजा अपना नाम भी भूल जाती हैं और लफ़्ज़े मिसिज़ या बेगम के साथ बिला झिजक अपने शोहर का नाम लेती हैं म-सलन मिसिज़ जमील या बेगम ख़लील।

अपने शोहर के नाम के साथ मश्हूर होने में अ़क़्लन भी नुक़्सान है के अगर ख़ुदा न ख़्वास्ता शोहरे नामदार ने त़लाक़ दे दी या शोहर पहले फ़ौत हो गया तो फिर ? क्यूं कि मरने से निकाह़ टूट जाता है लिहाज़ा आ़फ़िय्यत इसी में है कि औ़रत शादी के बा'द भी पुकारने में अपने वालिदे गिरामी के साथ ही निस्बत का इज़्हार करे म-सलन ''बिन्ते क़ासिम और बिन्ते हाशिम'' वग़ैरा। इसी त़रह़ शोहर को भी चाहिये कि बिला ज़रूरत ''मेरी बीवी (Wife)'' कहने के बजाए ह़स्बे ज़रूरत ''मेरे घर वाले या मेरे बच्चों की अम्मी'' वग़ैरा कलिमात कहे।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो और इस्लामी बहनो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल में ऐसी ही प्यारी सोच दी जाती है आप भी दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता हो जाइये, म-दनी माह़ोल में जहां इस्लामी भाइयों की इस्लाह़ हो रही है वहीं اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस्लामी बहनों की भी इस्लाह़ हो रही है, आप की तरग़ीब व तह़रीस के लिये एक म-दनी बहार पेश की

www.dawateislami.net

जाती है मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये : चुनान्चे बाबुल मदीना (कराची) की एक इस्लामी बहन के बयान का लुब्बे लुबाब है कि दा'वते इस्लामी के म-दनी रंग में रंगने से पहले बहुत सी औ़रतों की त़रह़ मैं भी बे पर्दगी, फ़ेशन ज़दगी और फ़ोह़ूश कलामी जैसी बुराइयों में मुलव्वस थी। फ़िल्में डिरामे देखना मेरा शौक़ और घर वालों से लड़ना झगड़ना मेरा मह़बूब मश्ग़ला था, अपने बच्चों के अब्बू से ज़बान दराज़ी करने को गोया मैं अपना ह़क़ समझती थी। इ़ल्मे दीन से कोसों दूर और फ़िक्रे आख़िरत से यक्सर ग़ाफ़िल थी। मेरे सुधरने की तरकीब यूं बनी कि एक दिन मैं अपनी बहन के साथ उन की सहेली के घर गई। उन की सहेली जो एक बा ह़या और पुर वक़ार शख़्सिय्यत की मालिक थीं, बड़ी मिलन-सारी से पेश आईं। **दौराने** गुफ़्त-गू इन्किशाफ़ हुवा के वोह दा'वते इस्लामी के महके महके म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हैं। मैं उन की ख़ुश अख़्लाक़ी और आ़जिज़ी व इन्किसारी से बड़ी मु-तअस्सिर हुई। उन्हों ने बड़े धीमे और मह़ब्बत भरे लहजे में हमें दा'वते इस्लामी के इस्लामी बहनों के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत की दा'वत दी। उन की इस मुख़्तसर सी इन्फ़िरादी कोशिश के नतीजे में मुझे इतवार के रोज़ होने वाले सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में ह़ाज़िरी की सआ़दत नसीब हुई। वहां पर

www.dawateislami.net

मैं ने तिलावते क़ुरआन, ना'त शरीफ़ और बयान सुना, जब **ज़िक्रुल्लाह** के बा'द इज्तिमाई दुआ में की जाने वाली गिर्या व ज़ारी सुनी तो मेरे दिल की दुन्या ज़ेरो ज़बर हो गई, मुझ पर अ़जीब रिक़्क़त त़ारी थी, पिछली ज़िन्दगी के गुनाह मेरी निगाहों में घूम रहे थे, मारे शर्म के मैं पानी पानी हो गई, आंखों से अश्के नदामत बह निकले। मैं ने ख़ूब गिड़गिड़ा कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से अपने तमाम गुनाहों की मुआ़फ़ी मांगी और तौबा कर ली। इज्तिमाअ़ के बा'द मैं ने एक नई ज़िन्दगी का आग़ाज़ किया, जिस में नमाज़ों की पाबन्दी थी, पर्दे की आ़दत थी, बड़ों का अदब छोटों पर शफ़्क़त थी, गुफ़्तार में नरमी थी, निगाहों की ह़िफ़ाज़त थी अल ग़रज़ क़दम क़दम पर शरीअ़त की पासदारी की कोशिश थी । दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल पर क़ुरबान, जिस की बदौलत मुझे सुधरने का मौक़अ़ मिला।

झूटा ख़्वाब बयान करने का अ़ज़ाब

अ़र्ज़ : झूटा ख़्वाब घड़ कर बयान करना कैसा है ?

इर्शाद : झूटा ख़्वाब घड़ कर सुनाने वाला सख़्त गुनहगार और अ़ज़ाबे नार का ह़क़दार है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "जो झूटा ख़्वाब बयान करे उसे बरोज़े क़ियामत जव के दो दानों में गांठ लगाने की

www.dawateislami.net

तक्लीफ़ दी जाएगी और वोह हरगिज़ गांठ नहीं लगा पाएगा।"[1]

एक और ह़दीसे पाक में है : "एक शख़्स ऐसा कलाम करता है जिस में (या'नी कलाम की क़बाह़त और उस के अन्जाम के बारे में) वोह ग़ौरो फ़िक्र नहीं करता तो वोह इस बात के सबब जहन्नम में इस मिक़्दार से भी ज़ियादा गिरेगा जिस क़दर मशरिक़ व मग़रिब के दरमियान फ़ासिला है।"[2]

याद रखिये ! ख़्वाब सुनाने वाले से क़सम का मुत़ा-लबा करना शरअ़न वाजिब नहीं, जो مَعَاذَاللہ عَزَّوَجَلَّ झूटा होगा वोह अपने उस झूट को साबित करने के लिये झूटी क़सम भी खा लेगा।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! झूटा ख़्वाब बयान करने और इस की ता'बीर पूछने से बचना चाहिये कि झूटे ख़्वाब की भी अगर ता'बीर बयान कर दी जाए तो वोह वाक़ेअ़ हो जाती है, इस ज़िम्न में एक ह़िकायत मुला-ह़ज़ा कीजिये चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना हिशाम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ السَّلَام फ़रमाते हैं : एक शख़्स ने ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन सीरीन عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْمُبِیْن से एक ख़्वाब बयान किया, कहने लगा : मैं ने ख़्वाब देखा कि मेरे हाथ में एक शीशे का पियाला है, जिस में पानी भी मौजूद है, वोह पियाला तो टूट गया है, मगर पानी जूं का तूं मौजूद है, येह सुन कर आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डर,

[1]... بخاری، ج۴، ص۴۲۲، حدیث ۷۰۴۲ [2]... بخاری، ج۴، ص۲۴۱، حدیث ۶۴۷۷

www.dawateislami.net

(और झूट न बोल) क्यूं कि तू ने ऐसा कोई ख़्वाब नहीं देखा, वोह शख़्स कहने लगा : سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! मैं आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से एक ख़्वाब बयान कर रहा हूं और आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमा रहे हैं कि तू ने कोई ख़्वाब नहीं देखा ? आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : बिला शुबा येह झूट है लिहाज़ा इस झूट के नतीजे का मैं ज़िम्मेदार नहीं हूं, अगर तू ने वाक़ेई येह ख़्वाब देखा है, तो तेरी बीवी एक बच्चा जनेगी, फिर वोह मर जाएगी और बच्चा ज़िन्दा रहेगा। इस के बा'द वोह शख़्स जब आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के पास से चला गया तो उस ने कहा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं ने तो ऐसा कोई ख़्वाब नहीं देखा था, येह सुन कर किसी ने कहा : लेकिन आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने ता'बीर तो बयान कर दी है ह़ज़रते सय्यिदुना हिशाम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ السَّلَام फ़रमाते हैं : इस वाक़िए़ को ज़ियादा अ़र्सा नहीं गुज़रा था कि उस शख़्स की बीवी ने एक बच्चा जना, फिर वोह मर गई और बच्चा ज़िन्दा रहा।[1]

ख़्वाब को लोगों से छुपाना कैसा ?

अ़र्ज़ : ऐसी सूरत में तो येही मुनासिब मा'लूम होता है कि लोगों में बयान करने के बजाए ख़्वाब को सीग़ए राज़ में रखा जाए।

इर्शाद : येह महज़ एक वस्वसा है, अच्छे और सच्चे ख़्वाब बयान करने और सुनने में कोई मुज़ा-यक़ा नहीं अलबत्ता ख़्वाब

1 ... تاریخ دمشق، ج۵۳، ص۲۳۲

www.dawateislami.net

देखने वाले को चाहिये कि वोह अपना ख़्वाब ता'बीर जानने वाले या अपने किसी ख़ैर ख़्वाह के सामने ही बयान करे जो उस के अच्छे ख़्वाब को बुरी ता'बीर से न बदल दे। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू क़तादा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूले करीम, रऊफ़ुर्रहीम عَلَیْہِ اَفْضَلُ الصَّلٰوۃِ وَالتَّسْلِیْم का फ़रमाने अ़ज़ीम है : अच्छा ख़्वाब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से है और बुरा ख़्वाब शैत़ान की त़रफ़ से तो जब तुम में से कोई पसन्दीदा चीज़ देखे तो अपने प्यारे के सिवा किसी से बयान न करे और जब ना पसन्द बात देखे तो उस के शर से और शैत़ान के शर से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगे और तीन बार थूक दे और उस की ख़बर किसी को न दे तो वोह ख़्वाब उसे मुज़िर न होगा।[1]

इस ह़दीसे पाक के तह़्त ह़ज़रते अ़ल्लामा अबुल ह़सन इब्ने बत्ताल عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْجَلَال फ़रमाते हैं : जब कोई अच्छा ख़्वाब देखे तो सिर्फ़ उसी शख़्स से बयान करे जो उस से मह़ब्बत करता है इस लिये कि मह़ब्बत करने वाले को वोह बात बुरी नहीं लगेगी जो उस के दोस्त को ख़ुश करने वाली है बल्कि वोह उस की शादमानी पर ख़ुश होगा और इस बात का ह़रीस नहीं होगा कि वोह उस के अच्छे ख़्वाब की कोई बुरी ता'बीर बयान करे। अगर उस ने अपना ख़्वाब किसी ऐसे शख़्स से बयान किया जो उस से मह़ब्बत नहीं करता तो वोह इस ख़त़रे से मह़फ़ूज़ नहीं होगा कि वोह (अपने बुग़्ज़ो इ़नाद और ह़सद की वज्ह से) उस के अच्छे ख़्वाब की कोई बुरी ता'बीर बयान कर दे और वोह उसी के मुवाफ़िक़

[1] ... مُسلِم، ص ۱۲۴۲، حدیث ۲۲۶۱

www.dawateislami.net

रूनुमा हो जाए जैसा कि ह़दीसे पाक में है : ख़्वाब का ज़ुहूर पहली ता'बीर बयान करने वाले के मुत़ाबिक़ होता है ।[1] **मेरे** आक़ाए ने'मत, आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द 22 सफ़ह़ा 270 पर इर्शाद फ़रमाते हैं : ''अह़ादीसे सह़ीह़ा से साबित हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इसे (या'नी ख़्वाब को) अम्रे अ़ज़ीम जानते और इस के सुनने, पूछने, बताने, बयान फ़रमाने में निहायत द-रजे का एहतिमाम फ़रमाते । सह़ीह़ बुख़ारी वग़ैरा में ह़ज़रते सय्यिदुना समुरह बिन जुन्दब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है, हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नमाज़े सुब्ह़ पढ़ कर ह़ाज़िरीन से दरयाफ़्त फ़रमाते : ''आज की शब किसी ने कोई ख़्वाब देखा ?'' जिस किसी ने देखा होता अ़र्ज़ कर देता, हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ता'बीर बयान फ़रमाते ।[2]

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : ''अच्छा ख़्वाब नुबुव्वत का 70वां टुकड़ा है । जो कोई अच्छा ख़्वाब देखे उसे चाहिये कि इस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़म्द बजा लाए और लोगों के सामने बयान करे और जो इस के इ़लावा देखे तो अपने ख़्वाब से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगे और किसी के सामने बयान न

مدینہ

1... ابنِ ماجہ، ج۴، ص۳۰۵، حدیث۳۹۱۵ / شرح ابن بطال، ج۹، ص ۵۵۷

2... بخاری، ج۱، ص۴۶۷، حدیث۱۳۸۶

www.dawateislami.net

करे ताकि वोह उसे नुक़्सान न दे।''[1]

कुरआने करीम, अहादीसे मुबा-रका और बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِين की किताबों में ख़्वाबों का ब कसरत तज़्किरा है। हज़रते सय्यिदुना इमाम अबुल क़ासिम कुशैरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى ने ''रिसालए कुशैरिय्या'' में एक बाब बनाम ''رُؤْيَا الْقَوم'' क़ाइम किया है जिस में 66 औलियाए किराम के ख़्वाब नक़्ल फ़रमाए हैं। हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى ने एहयाउल उ़लूम की जिल्द 4 सफ़हा 540 ता 543 पर एक बाब बनाम ''मनामातुल मशाइख़'' क़ाइम किया है जिस में उन्हों ने 49 ख़्वाब नक़्ल किये हैं। इसी त़रह़ ''ह़याते आ'ला ह़ज़रत'' (मत़्बूआ़ मक्तबए न-बविय्या गन्ज बख़्श रोड मर्कज़ुल औलिया लाहोर) के सफ़हा नम्बर 424 ता 432 पर मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن के 14 ख़्वाब ख़ुद आप ही की ज़बानी मरवी हैं।

पतंग उड़ाना और इस की डोर लूटना कैसा ?

अ़र्ज़ : पतंग उड़ाना और इस की डोर लूटना कैसा है ?

इर्शाद : पतंग उड़ाना लह्वो लइ़ब है जो कि ना जाइज़ है और इस की डोर लूटना ह़राम है। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे

[1] ... مُسْنَدِ احمد، ج۲، ص۵۰۲، حدیث ۶۲۲۳

www.dawateislami.net

अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن से कन्कय्या या'नी पतंग उड़ाने और इस की डोर लूटने के बारे में सुवाल हुवा तो इर्शाद फ़रमाया : ''कन्कय्या उड़ाना लह्वो लइ़ब और ''लह्व'' ना जाइज़ है। ह़दीस में है : ''كُلُّ لَهْوِ الْمُسْلِمِ حَرَامٌ اِلَّا ثَلَاثَةٌ'' मुसल्मान के लिये खेल की चीज़ें सिवाए तीन चीज़ों के सब ह़राम हैं।''[1] डोर लूटना नहबा (लूटमार) और नहबा ह़राम है कि हुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए़ यौमुन्नुशूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने लूटमार से मन्अ़ फ़रमाया।[2] (इस सूरत में) लूटी हुई डोर का मालिक अगर मा'लूम हो तो फ़र्ज़ है कि उसे दे दी जाए और अगर न दी और बिग़ैर उस की इजाज़त के उस से कपड़ा सिया तो उस कपड़े का पहनना ह़राम है, उसे पहन कर नमाज़ मक्रूहे तह़रीमी है जिस का फैरना वाजिब है इस वज्ह से कि उस में ह़राम शामिल हो गया है जैसे किसी की ग़स्ब शुदा ज़मीन पर नमाज़ पढ़ना और अगर मालिक न हो तो वोह लुक़्ता है या'नी पड़ी पाई चीज़, वाजिब है कि उसे मश्हूर किया जाए यहां तक कि मालिक के मिलने की उम्मीद क़त़्अ़ (ख़त्म) हो। उस वक़्त वोह शख़्स ग़नी है तो फ़क़ीर को दे दे और अगर फ़क़ीर है तो अपने सर्फ़ (इस्ति'माल) में ला सकता है फिर जब मालिक ज़ाहिर हो

مدینہ

1...सिवाए तीन खेलों के दुन्या का हर खेल बात़िल है (1) अपनी कमान से तीर अन्दाज़ी करना (2) अपने घोड़े को शाइस्तगी सिखाना (3) अपनी घर वाली या'नी अहलिया के साथ खेलना, येह तीनों जाइज़ हैं।

(مستدرک حاکم، ج۲، ص۴۱۹، حدیث، ۲۵۱۳)

2... بخاری، ج۲، ص۱۳۷، حدیث ۲۴۷۴

www.dawateislami.net

और फ़क़ीर के सर्फ़ में आने पर राज़ी न हो तो अपने पास से उस का तावान (या'नी इसी त़रह़ की इतनी ही डोर या उस की रक़म) देना होगा।[1]

एक और मक़ाम पर इर्शाद फ़रमाते हैं : "कन्कय्या (पतंग) उड़ाना मन्अ़ और लड़ाना गुनाह और इस का लूटना ह़राम है। ख़ुद आ कर गिर जाए तो उसे फाड़ डाले और अगर मा'लूम न हो कि किस की है तो डोर किसी मिस्कीन को दे दे कि वोह किसी जाइज़ काम में सर्फ़ कर ले और ख़ुद मिस्कीन हो तो अपने सर्फ़ में लाए फिर जब मा'लूम हो कि फ़ुलां मुस्लिम की है और वोह इस तसद्दुक़ (स-दक़ा करने) या इस मिस्कीन के अपने सर्फ़ में लाने पर राज़ी न हो तो देना होगी और कन्कय्या (पतंग) का मुआ़-वज़ा बहरह़ाल कुछ नहीं।"[2]

बसन्त मेले और पतंग बाज़ी की आफ़ात

अ़र्ज़ : बसन्त मनाने और इस में पतंग बाज़ी करने के बारे में कुछ इर्शाद फ़रमा दीजिये।

इर्शाद : बसन्त मेला येह एक गुस्ताख़े रसूल की यादगार है इसे जारी करने वाले मर खप कर अपने कैफ़रे किरदार को पहुंच गए मगर अफ़्सोस ! सद करोड़ अफ़्सोस ! अपनी यक़ीनी और अटल मौत से ग़ाफ़िल मुसल्मानों ने इसे जारी रखने में अपना किरदार अदा किया और कर रहे हैं

مدینہ

1 .....अह़कामे शरीअ़त, ह़िस्सए अव्वल, स. 37

2 ..... फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 24, स. 660, मुलख़्ख़सन

www.dawateislami.net

जिस की वज्ह से अब भी येह गुनाहों भरा सिल्सिला तमाम तर हलाकत ख़ैज़ियों के साथ अपनी नहूसतें लुटा रहा है। आज मुसल्मान कहलाने वाले "बसन्त" के नाम से ग़ैर मुस्लिमों के इस तहवार को फ़ख़्रिय्या तौर पर बड़ी धूमधाम से मनाते हैं जिस में पतंग बाज़ी के ख़ूब ख़ूब मुक़ाबले होते हैं, एक दूसरे की डोरें काटी और लूटी जाती हैं, मकानों की छतों पर डेक लगा कर फ़ोहूश गाने चलाए जाते हैं। पतंग कट जाने पर इतनी ख़ुशी मनाई जाती है कि लड़के और लड़कियां इकठ्ठे मिल कर रक़्स करते हैं, मर्द तो मर्द ख़वातीन भी इस कारे गुनाह में मर्दों से पीछे रह जाने को गोया ख़िलाफ़े शान ख़याल करती हैं, बड़े बड़े शहरों में पहले ही से होटल और ऊंची ऊंची इमारतों की छतें बुक हो जाती हैं, जिस में मुल्क के तूल व अ़र्ज़ से बे शुमार लोग शरीके मआ़सी (गुनाह) होते हैं, अल ग़रज़ बे ह़याई व फ़ह़्ह़ाशी और दीगर गुनाहों का बाज़ार इतना गर्म होता है कि اَلْاَمَانُ وَالْحَفِیْظ ।

हर साल इस मन्हूस तहवार के बाइ़स बे शुमार अफ़राद छतों से गिर कर, पतंग की डोर फंसने, बिजली की तारों के गिरने या मुक़ाबला बाज़ी के दौरान आपस में लड़ झगड़ कर मौत की भेंट चढ़ जाते हैं, न जाने कितने ही बच्चों की शह्रगें तेज़ डोर से कट जाती हैं, बीसियों अफ़राद टांगें या बाज़ू तुड़वा कर उ़म्र भर के लिये अपाहज और वालिदैन और दीगर अहले ख़ाना के लिये वबाले जान बन जाते हैं और कई मां बाप अपने बच्चे को इस

www.dawateislami.net

मन्हूस तहवार की नज़्र कर के पूरी ज़िन्दगी के लिये दिल पर औलाद की जुदाई का दाग़ लिये फिरते हैं। अहम शख़्सिय्यतों के इलावा ग़ैर मुल्की सफ़ीरों को भी मदऊ कर के पतंग बाज़ी के नज़ारे की ज़हमत दी जाती है और वोह लोग इस क़ौम की इन कारस्तानियों को देख कर मुस्कुराते हैं कि इस क़ौम का बच्चा बच्चा हज़ारों का मक़रूज़ है लेकिन येह क़ौम अपने मुल्क को बचाने के बजाए करोड़ों रुपै पतंग बाज़ी की नज़्र कर रही है। अल ग़रज़ नफ़्सो शैतान की चाल में आ कर बे शुमार मुसल्मान अपना वक़्त और पैसा ज़ाएअ़ करने के साथ साथ बसा अवक़ात अपनी जान से भी हाथ धो बैठते हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सभी मुसल्मानों को अ़क़्ले सलीम अ़ता फ़रमाए और इन फ़ुज़ूल व बेहूदा कामों से ख़ुद भी बचने और दूसरों को बचाने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।[1]

दिल के फफोले जल उठे सीने के दाग़ से
इस घर को आग लग गई घर के चराग़ से

ईमान की हिफ़ाज़त का वज़ीफ़ा

अ़र्ज़ : ईमान पर ख़ातिमे के लिये कोई वज़ीफ़ा इर्शाद फ़रमा दीजिये।

ـــمدینه

1.... मज़ीद तफ़्सीलात जानने के लिये शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना **अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का रिसाला "बसन्त मेला" का मुता-लआ़ कीजिये। (शो'बए फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा)

www.dawateislami.net

इर्शाद : दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 561 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत" (मुकम्मल) सफ़ह़ा 311 पर शहज़ादए आ'ला ह़ज़रत, ताजदारे अहले सुन्नत, हु़ज़ूर मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द मौलाना मुस्त़फ़ा रज़ा ख़ान عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ الرَّحۡمٰن फ़रमाते हैं : एक रोज़ बा'दे फ़राग़ नमाज़े इशा लोग दस्त बोस हो रहे थे उस मज्मअ़ में से एक साह़िब ने (हु़ज़ूर आ'ला ह़ज़रत की) ख़िदमते बा ब-र-कत में अ़र्ज़ की : हु़ज़ूर ! मैं "ज़िलअ़ होशंगआबाद" का रहने वाला हूं, मुझे हु़ज़ूर की "जबलपूर" तशरीफ़ आ-वरी की रेल (ट्रेन) में ख़बर मिली डाक से सिर्फ़ दुआ़ के वासित़े ह़ाज़िर हुवा हूं कि खु़दावन्दे करीम (عَزَّوَجَلَّ) ईमान के साथ ख़ातिमा बिलख़ैर करे ।

हु़ज़ूर ने दुआ़ दी और इर्शाद फ़रमाया : इक्तालीस बार सुब्ह़[1] को "يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ" अव्वल व आख़िर दुरूद शरीफ़, नीज़ सोते वक़्त अपने सब अवराद के बा'द सूरए काफ़िरून रोज़ाना पढ़ लिया कीजिये इस के बा'द कलाम (गुफ़्त-गू) वग़ैरा न कीजिये हां अगर ज़रूरत हो तो कलाम (बात) करने के बा'द फिर सूरए काफ़िरून तिलावत कर लें कि ख़ातिमा (इख़्तिताम) इसी पर हो, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ ख़ातिमा ईमान पर होगा और तीन बार सुब्ह़ और शाम तीन बार इस दुआ़ का विर्द रखें : "اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَعُوْذُ بِكَ مِنْ اَنْ نُّشْرِكَ بِكَ شَيْاً نَّعْلَمُهٗ وَنَسْتَغْفِرُكَ لِمَا لَا نَعْلَمُهٗ" [2]

मदीना

1.... आधी रात ढले से सूरज की पहली किरन चमक्ने तक सुब्ह़ कहलाती है और दोपहर ढलने से गुरूबे आफ़्ताब तक शाम कहलाती है । (शो'बए फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा)

2.... مسندِ احمد، ج۷، ص۱۴۶، حدیث۱۹۶۲۵

www.dawateislami.net

आप भी आ'ला ह़ज़रत عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ رَبِّ الۡعِزَّت के इर्शाद फ़रमूदा वज़ाइफ़ बयान कर्दा त़रीक़े के मुत़ाबिक़ पाबन्दी के साथ कीजिये اِنۡ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ख़ातिमा बिलख़ैर नसीब होगा । इस के इलावा ह़ज़रते सय्यिदुना ख़िज़्र عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का नाम मअ़ कुन्यत व वल्दिय्यत व लक़ब याद कर लीजिये कि **तफ़्सीरे सावी** में है : जो कोई ह़ज़रते सय्यिदुना ख़िज़्र عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का नाम मअ़ कुन्यत व वल्दिय्यत व लक़ब याद रखेगा उस का ख़ातिमा ईमान पर होगा । आप عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का नाम मअ़ कुन्यत व वल्दिय्यत व लक़ब येह है : **''अबुल अ़ब्बास बल्या बिन मल्कान अल ख़िज़्र''**[1]

आंखों में जल्वा शाह का और लब पे ना'त हो
जब रूह़ तन से हो जुदा या रब्बे मुस्त़फ़ा
ऐ काश ! ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा पए ज़िया
ईमान पर हो ख़ातिमा या रब्बे मुस्त़फ़ा

(वसाइले बख़्शिश)

मोमिनों पर तीन एह़सान करो !

ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन मुआ़ज़ राज़ी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡهَادِی फ़रमाते हैं : तुम से मोमिनों को अगर तीन फ़वाइद ह़ासिल हों तो तुम मोह़्सिनीन (या'नी एह़सान करने वालों) में शुमार किये जाओगे (1) अगर इन्हें नफ़्अ़ न पहुंचा सकते तो नुक़्सान भी न पहुंचाओ (2) इन्हें ख़ुश नहीं कर सकते तो रन्जीदा भी न करो (3) इन की ता'रीफ़ नहीं कर सकते तो बुराई भी मत करो । (تَنۡبِیۡهُ الۡغَافِلِین، ص٨٨، پشاور)

[1] ...... تفسیرِ صاوی، ج۴، ص۱۲۰۷

www.dawateislami.net

ماخذومراجع

	نام کتاب	مصنف/مؤلف	مطبوعہ
1	حاشیۃ الصاوی علی الجلالین	احمد بن محمد صاوی مالکی خلوتی، متوفّٰی ۱۲۴۱ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۲۱ھ
2	صحیح البخاری	امام ابو عبد اللہ محمد بن اسماعیل بخاری، متوفّٰی ۲۵۶ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۹ھ
3	صحیح مسلم	امام مسلم بن حجاج قشیری نیشاپوری، متوفّٰی ۲۶۱ھ	دار ابن حزم بیروت ۱۴۱۹ھ
4	سنن الترمذی	امام محمد بن عیسٰی ترمذی، متوفّٰی ۲۷۹ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۴ھ
5	سنن ابی داود	امام ابو داود سلیمان بن اشعث سجستانی، متوفّٰی ۲۷۵ھ	دار احیاء التراث العربی ۱۴۲۱ھ
6	سنن ابن ماجہ	امام محمد بن یزید القزوینی ابن ماجہ، متوفّٰی ۲۷۳ھ	دار المعرفۃ بیروت ۱۴۲۰ھ
7	مسند امام احمد	امام احمد بن محمد بن حنبل، متوفّٰی ۲۴۱ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۴ھ
8	المستدرک	امام ابو عبد اللہ محمد بن عبد اللہ حاکم، متوفّٰی ۴۰۵ھ	دار المعرفۃ بیروت ۱۴۱۸ھ
9	کنز العمال	علامہ علاء الدین علی بن حسام الدین ہندی متوفّٰی ۹۷۵ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۱۹ھ
10	شرح ابن بطال	امام علی بن خلف بن عبد المالک بن بطال، متوفّٰی ۴۴۹ھ	ریاض
11	تاریخ مدینہ دمشق	حافظ ابو القاسم علی بن حسن ابن عساکر شافعی متوفّٰی ۵۷۱ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۶ھ
12	مرآۃ المناجیح	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفّٰی ۱۳۹۱ھ	ضیاء القرآن پبلی کیشنز لاہور
13	الدر المختار	محمد بن علی المعروف بعلاء الدین حصکفی متوفّٰی ۱۰۸۸ھ	دار المعرفۃ بیروت ۱۴۲۰ھ
14	فتاوٰی رضویہ	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفّٰی ۱۳۴۰ھ	رضا فاؤنڈیشن مرکز الاولیا لاہور
15	احکام شریعت	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفّٰی ۱۳۴۰ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
16	ملفوظات اعلیٰ حضرت	مفتیٔ اعظم ہند محمد مصطفی رضا خان، متوفّٰی ۱۴۰۲ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
17	بہار شریعت	صدر الشریعہ مفتی محمد امجد علی اعظمی، متوفّٰی ۱۳۶۷ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
18	تنبیہ الغافلین	فقیہ ابو اللیث نصر بن محمد سمرقندی، متوفّٰی ۳۷۳ھ	پشاور
19	دلیل العارفین از ہشت بہشت	ملفوظات خواجہ معین الدین اجمیری متوفّٰی ۶۳۳ھ	شبیر برادرز مرکز الاولیا لاہور
20	بہشت کی کنجیاں	شیخ الحدیث علامہ عبد المصطفی اعظمی	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی

www.dawateislami.net

फ़ेहरिस

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत.....2
अदइय्यए मासूरा से मुराद.....2
यक़ीने कामिल की ब-र-कतें.....5
शैख़ैन, त़-रफ़ैन, साहिबैन और सहीहैन से मुराद.....8
क़ुरआने पाक को चूमना कैसा ?.....9
क़ुरआने पाक वाले सन्दूक़ पर सामान रखना कैसा ?.....11
क़ुरआने पाक पर दीनी कुतुब रखना कैसा ?.....12
क़ुरआने पाक हाथों से छूटने का कफ़्फ़ारा.....13
नंगे सर बैतुल ख़ला में जाना कैसा ?.....14
औ़रत का अपने शोहर को नाम ले कर पुकारना कैसा ?.....15
झूटा ख़्वाब बयान करने का अ़ज़ाब.....18
ख़्वाब को लोगों से छुपाना कैसा ?.....20
पतंग उड़ाना और इस की डोर लूटना कैसा ?.....23
बसन्त मेले और पतंग बाज़ी की आफ़ात.....25
ईमान की हिफ़ाज़त का वज़ीफ़ा.....27
मआख़िज़ो मराजेअ़.....30

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुमा'रात बा'द नमाज़े इशा आप के यहां होने वाले **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ❁ सुन्नतों की तरबियत के लिये **म-दनी क़ाफ़िले** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ❁ रोज़ाना "**फ़िक्रे मदीना**" के ज़रीए **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह की पहली तारीख़ में अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये।

मेरा म-दनी मक़्सद : "**मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।** اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ" अपनी इस्लाह़ के लिये "**म-दनी इन्आ़मात**" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "**म-दनी क़ाफ़िलों**" में सफ़र करना है।

मक-त-बतुल मदीना®
दा'वते इस्लामी
फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बगीचे के पास, मिरज़ापूर, अहमदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net